Apollo Tyres Q1 net up nearly threefold at ₹252 crore

Apollo Tyres posted a nearly three-fold rise in consolidated net profit at Rs 251.84 crore for the June quarter, driven by robust sales across various markets including India and Europe. The company had reported a net profit of Rs 88.3 crore a year ago. Net sales stood at Rs 4,249.39 crore. "All our operations have done well in the past quarter, and have reported a good set of numbers. This is a result of planning and investments in capacities, both in India and Europe, in addition to the increasing demand for our products with the OEMs, as well as, in the replacement market," chairman Onkar S Kanwar said.

BUSINESS LINE N.,D 2/8/18

Apollo Tyres posts ₹252-cr profit

New Delhi, August 1

Apollo Tyres on Wednesday reported a consolidated net profit of ₹252 crore for Q1 ended June 30, a three-fold jump over the ₹88 crore posted in the corresponding period last year. Net sales also rose 30 per cent to ₹4,249 crore (₹3,258 crore), aided by a healthy growth in India and Europe across various product segments. OUR BUREAU

APOLLO TYRES Q1 NET SURGES TO ₹252 CR

Apollo Tyres on Wednesday posted nearly three-fold rise in consolidated net profit at ₹251.84 crore for the June quarter, driven by robust sales across various markets including India and Europe. The company had reported a net profit of ₹88.3 crore during the same period of 2017-18. Net sales stood at ₹4,249.39 crore during the April-June period as compared with ₹3,512.98 crore in the same period of 2017-18.

ECONOMICS TIMES N.,D 2/8/18

Sachin to Endorse Apollo Tyres

Gaurav.Laghate@timesgroup.com

Mumbai: Sachin Tendulkar may have hung up his boots five years ago, but there are brands that still want to be associated with the Master Blaster.

The latest to turn to the God of Cricket is Apollo Tyres. Tendulkar will be the brand ambassador for India's second-largest tyre company over the next five years.

Both Apollo Tyres and SRT Sports Management, which represents Tendulkar, declined to comment. However, a highly placed source close to the development told **ET** that the deal has been signed. "It's a five-year deal with Sachin. The shoot is planned and the campaign should be out in the next couple of months," the source added. The size of the deal is estimated between ₹15 and ₹20 crore.

Tendulkar has previously been associated with leading tyre brand MRF for about two decades. It became a performance brand synonymous with Tendulkar as he used the MRF logo on his bat for 13 years.

"MRF and Sachin are unforgettable together... People don't remember any other brand on Sachin's bat. It will be very difficult for Apollo to create the same kind of brand connect. This is like taking Shahrukh away from Pepsi," said Tuhin Mishra, MD of sports marketing firm Baseline Ventures.

Ad man and brand expert Sandeep Goyal, believes that Apollo's target will be the audience that has once seen Tendulkar play and is still part of his fan base. -

नई दिल्ली | 2 अगस्त 2018 गुरुवार बिज़नेस स्टैंडर्ड

रबर का उत्पादन-खपत अंतर बढ़ा

टी ई नरसिम्हन
चेन्नई, 1 अगस्त

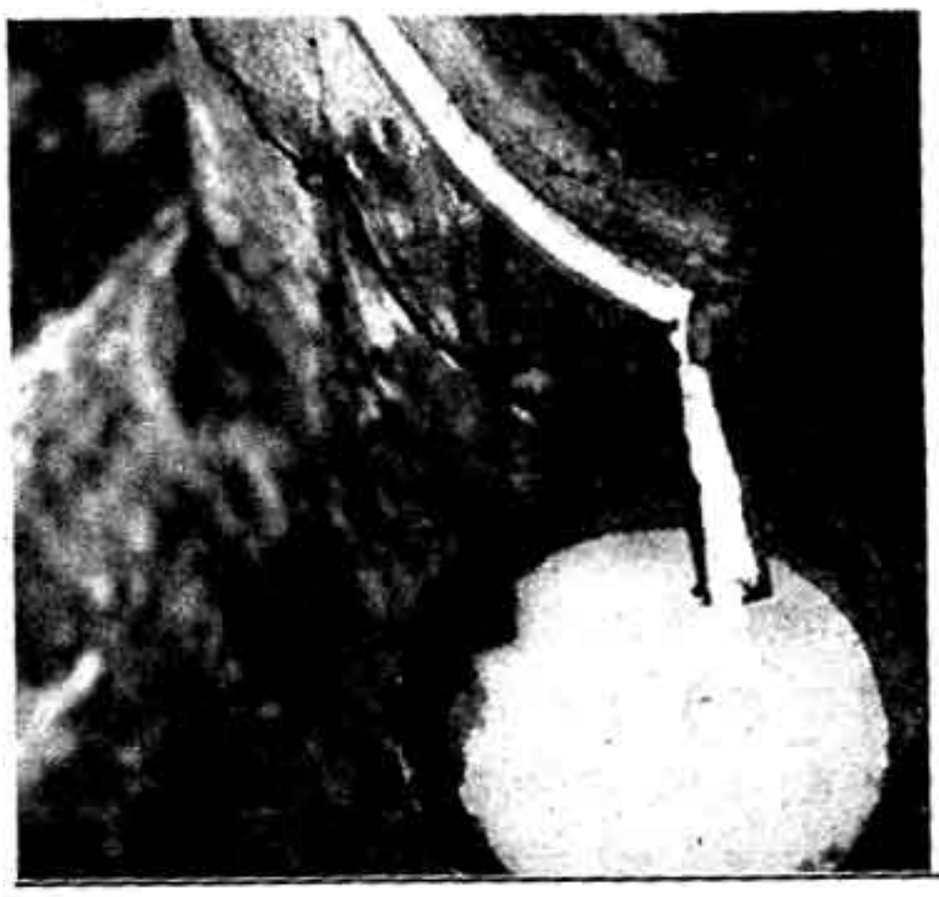

- उत्पादन घटकर 6 वर्ष के निचले स्तर पर रह जाने से यह अंतर जून तिमाही में बढ़कर 58 प्रतिशत हो गया
- रबर उत्पादन में 12 प्रतिशत तक की कमी आई जबकि इसकी खपत पहली तिमाही में 14 प्रतिशत तक बढ़ी

प्राकृतिक रबर उत्पादन-खपत अंतर या घाटा चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में बढ़कर कुल खपत के 58 प्रतिशत पर पहुंच गया जो एक साल पहले की समान अवधि में 46 प्रतिशत दर्ज किया गया था। रबर उत्पादन 2018-19 की पहली तिमाही के दौरान 1.26 लाख टन के 6 वर्ष के निचले स्तर पर रह गया है जबकि खपत 3.02 लाख टन के उच्च स्तर पर दर्ज की गई है। ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटमा) के अनुसार उत्पादन-खपत अंतर जून तिमाही में बढ़कर 58 प्रतिशत हो गया। इससे कच्चे माल के संदर्भ में चिंता बढ़ गई है।

भारतीय रबर बोर्ड द्वारा जारी ताजा आंकड़ों में कहा गया है कि रबर उत्पादन में 12 प्रतिशत तक की कमी आई है जबकि इसकी खपत पहली तिमाही में 14 प्रतिशत तक बढ़ी जिससे उत्पादन और खपत के बीच यह अंतर पैदा हुआ है। उत्पादन-खपत अंतर चालू वित्त वर्ष के पहले तीन महीनों में 1.76 लाख टन पर दर्ज किया गया जबकि वित्त वर्ष 2018 की समान अवधि में यह 1.21 लाख टन पर था।

रबर बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार जून 2018 में लगातार दूसरे महीने रबर की खपत एक लाख टन के आंकड़े को पार कर गई। दूसरी तरफ उत्पादन पहले तीन महीनों के दौरान 45,000 टन से नीचे बना रहा। घरेलू रबर उत्पादन में ऐसे समय में भी कमी आई है जब घरेलू कीमतें अंतरराष्ट्रीय कीमतों की तुलना में ऊंची बनी हुई हैं।

उत्पादन घटने से टायर उद्योग चिंतित

एटमा के महानिदेशक राजीव बुधराजा ने कहा, 'घरेलू रबर उत्पादन चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सिर्फ 42 प्रतिशत घरेलू मांग को ही पूरा कर सका। इस तरह की किल्लत और घरेलू रबर की अनुपलब्धता से टायर उद्योग के लिए जोखिम की स्थिति पैदा हो गई है। टायर निर्माताओं को देश में यदि परिचालन बरकरार रखना है तो उन्हें महंगे आयात पर निर्भरता बढ़ाने की जरूरत होगी।'

एटमा के अनुसार, कच्चा माल टायर उद्योग की जीवनरेखा है और मुख्य कच्चे माल के तौर पर रबर का योगदान 40 प्रतिशत से अधिक है जो इस उद्योग की वृद्धि और प्रतिस्पर्धी क्षमता के लिए जरूरी है। हालांकि रबर की घरेलू उपलब्धता में लगातार गिरावट और उसकी कमजोर आपूर्ति से टायर कंपनियों की उत्पादन प्रक्रिया ऐसे समय में प्रभावित हो रही है जब बड़ी क्षमता चालू हो रही है।

भारी मांग-आपूर्ति के अंतर को पाटने के लिए रबर आयात जरूरी हो गया है। हालांकि आपूर्ति सख्त नीतिगत परिवेश की वजह से प्रभावित हो रही है। रबर आयात पर 25 फीसदी का भारी भरकम सीमा शुल्क है जो अन्य रबर आयातक देशों की तुलना में काफी ज्यादा है। बुधराजा ने कहा, 'हम बगैर शुल्क के रबर आयात की अपनी मांग को उठा चुके हैं। महंगा निर्यात इस उद्योग द्वारा अपनाए जा रहे लागत बचत के उपायों को नाकाम कर रहा है। उद्योग अंतरराष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लागत बचत के उपयों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।'